हमारी बात

'सबला' के दो साल पूरे हो गए हैं। इन दो सालों में हमने काफी रास्ता तय किया है। ग्राम-स्तर पर काम कर रहीं कई बहनों ने हमें अपने अनुभव लिखे और समस्याएं उठाईं। उन पर हमने चर्चा की। सहयोगी संस्थाओं ने सुझाव दिए। उनका हमने स्वागत किया। हमारी पूरी कोशिश है कि 'सबला' अपने उद्देश्य को पूरा करे—गांवों की बहनों को झकझोर कर जगाए। उनमें आत्म-विश्वास पैदा करे। उन्हें यह महसूस कराए कि औरत कमज़ोर नहीं है। उसे अपनी छिपी ताकत को पहचानना है। उन बेड़ियों को तोड़ना है जो उसे जकड़े हुए हैं।

इंसानी ताकत दो तरह की होती है। एक, शरीर की और दूसरी, दिल व दिमाग की। हमें दोनों तरह की ताकत को बढ़ाना है। 1981 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में 1,000 पुरुषों के पीछे सिर्फ 935 औरतें हैं। औरतें कम क्यों हैं? क्या लड़कियां कम पैदा होती हैं? नहीं।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार पांच साल तक की उम्र के मरने वाले बच्चों में लड़कियों की संख्या ज्यादा होती है। यह इसलिए है कि बचपन में उनकी उचित देखभाल नहीं होती। उन्हें पौष्टिक आहार नहीं दिया जाता। बीमार होने पर इलाज नहीं होता। कमजोर लड़की माहवारी के कारण और कमजोर हो जाती है। मां बनते-बनते उसका क्या हाल होता है, इसका अंदाज आप लगा सकती हैं।

यह धारणा कि औरत को पुरुष के मुकाबिले कम पौष्टिक खुराक चाहिए गांवों में तो बिल्कुल सही नहीं उतरती। ग्रामीण औरतें घर के अलावा खेत-क्यार के काम करती हैं। एक सर्वेक्षण से पता चला कि औरतों के काम के घंटे पुरुषों से कुछ ज्यादा बैठते हैं। सिर पर ईंटें ढोती औरत दीवार पर पलस्तर लगाते पुरुष के मुकाबिले ज्यादा ही मेहनत करती है। कुम्हार औरत दूर से मिट्टी लाती है, उसे गूंधती है जबकि पुरुष चाक पर बैठा काम करता है।

बच्चा जनने और उसे पालने में औरत के शरीर पर जो गुजरती है वही जानती है। फिर भी औरतों के (बचपन में लड़कियों के) आहार पर ध्यान नहीं दिया जाता। यही गैर-बराबरी पढ़ाई के बारे में भी है।

घर-आंगन से जो गैर-बराबरी शुरू होती है, वह सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में और ज्यादा होती जाती है। इसे खत्म या कम करने का काम औरतों को ही करना होगा। जब तक औरतें अबला बनी पुरुष के सहारे की तलाश में रहेंगी, यह गैर-बराबरी खत्म नहीं होगी। सबला का मतलब सिर्फ शारीरिक बल से नहीं है। ज्ञान का बल और पढ़ाई-लिखाई का बल भी कमज़ोर इंसान को सबल बनाता है।

कम पढ़ी-लिखी व नव-साक्षर बहनों के लिए 16 पृष्ठ (13 से 28 तक) मोटे टाइप में दिए गए हैं।

संपादिका